आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2636 • उदयपुर, सोमवार 14 मार्च, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

शिवपुरी (मध्यप्रदेश) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षों से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 27 फरवरी 2022 को मंगलम पोला ग्राउण्ड के सामने, शिवपुरी में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता मंगलम, शिवपुरी, मध्यप्रदेश रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 457, कृत्रिम अंग माप 88, कैलिपर्स माप 45, की सेवा हुई तथा 67 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् अक्षय कुमार सिंह जी (जिलाधीश महोदय, शिवपुरी), अध्यक्षता रमेशचन्द्र जी चंदेल (पुलिस अधीक्षक महोदय, शिवपुरी), विशिष्ट अतिथि श्रीमान डॉ. राघवेन्द्र जी शर्मा (मध्यप्रदेश बाल संरक्षण आयोग, पूर्व अध्यक्ष), श्रीमान पवन जी जैन (मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी), श्रीमान राकेश जी गुप्ता (अध्यक्ष मंगलम), श्रीमान राजेश जी मजेजा (सचिव शिवपुरी), डॉ.शैलेन्द्र जी गुप्ता (उपाध्यक्ष शिवपुरी), इंद्र प्रकाश जी गांधी (समाजसेवी) रहे। डॉ. नवीन जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), नेहा जी अग्निहोत्री (पी.एन.डो.), श्री भगवतीलाल जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम में श्री मुकेश कुमार जी शर्मा (शिविर प्रभारी), श्री देवीलाल जी मीणा, श्री हरिश जी रावत (सहायक), श्री प्रवीण जी (फोटोग्राफर) ने भी सेवायें दी।

कल्याण (महाराष्ट्र) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 24 फरवरी 2022 को पुण्योदय पार्क क्लब हाउस डॉन बॉस स्कूल, कल्याण में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता भगवत खुबाजी माननीय मंत्री भारत सरकार रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 34 कृत्रिम अंग वितरण 23, कैलिपर्स वितरण 13, की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीराम प्रणीण स्वामी नाथन (महिन्द्रा लॉजिस्टक एमडी), अध्यक्षता प्रभुनाथ जी भोईर (नगर सेवक), विशिष्ट अतिथि श्री जयंवत जी भोईर (नगर सेवक), श्री महेश जी अग्रवाल (शाखा संयोजक ठाणे), श्री कमल जी लोढ़ा (शाखा संयोजक), डॉ. विजय पंवार जी (महिन्द्रा लॉजिस्टिक), श्री सुनिल जी वायल (नगर सेवक) रहे।

श्री किशन जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम में श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश जी सेन (आश्रम प्रभारी), श्री गोपाल जी स्वामी, श्री बजरंग जी (सहायक) ने भी सेवायें दी।

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity
SINCE 1985

स्नेह मिलन समारोह

दिनांक व स्थान
समय : सायं 4.00 बजे से

20 मार्च 2022 : होटल जयपुर हेरिटेज, बद्रीनारायण मंदिर के पीछे, आमेर रोड़, जयपुर, राज.
20 मार्च 2022 : प्रशान्ति विद्या मंदिर, महावीर नगर 2, खण्डेलवाल नर्सिंग होम के पीछे, कोटा, राज.
20 मार्च 2022 : बी राधिका भवन, राम वाटिका सोसाईटी, स्वामी नारायण नगर, बडोदा, गुजरात

इसस्नेह मिलन समारोह में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन,नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

औरंगाबाद (बिहार) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षों से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 20 फरवरी 2022 को आर्यन महाजन नाट्य कला मंच औरंगाबाद में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता श्रीमान् उदयकुमार जी अध्यक्ष, नगरपरिषद औरगांबाद, बिहार रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 505, कृत्रिम अंग माप 90, कैलिपर्स माप 42, की सेवा हुई तथा 75 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् उदयकुमार जी (अध्यक्ष, नगरपरिषद औरंगाबाद), अध्यक्षता डॉ. महावीर प्रसाद जी जैन (रोटरी क्लब), विशिष्ट अतिथि श्री डॉ. चन्द्रशेखर जी (रोटरी क्लब), श्री विनोद कुमार जी (अध्यक्ष, विकलांग संघ), श्री गिरजा राम जी (उपाध्यक्ष, विकलांग संघ), डॉ. अंजली जी (बुनयाद केन्द्र, बारुद ब्लॉक) रहे। डॉ. अमीत कुमार जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), डॉ. पंकज कुमार जी (पी.एन.डो), श्री नरेश जी वैश्णव (टेक्नीशियन), शिविर टीम में श्री लालसिंह जी भाटी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश जी त्रिपाठी, श्री बहादुर सिंह जी मीणा, श्री सत्यनारायण जी मीणा (सहायक) ने भी सेवायें दी।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

जनकराज जैसे भी है जब सुना, कैकेयी ने ऐसे वरदान ले लिये। अपने दूतों को भेजा था अयोध्या में, आप गुप्तचर बनकर जाइये। भरतजी के मन की दशा को मुझे बताइये। और जब भरतजी की दशा बतायी। भरतजी ने कहा– सिर के बल जाऊँगा।

सिर बल जाऊँ उचित अस मोरा।
सेवा धरम परम कठोरा।।

और भरतजी जैसे चित्रकूट की तरफ रवाना हुए। जनकराजजी, विदेहराजजी और सुनयना माताजी वो भी इधर की तरफ रवाना हो गये। चित्रकूट से तीन किलोमीटर दूर रहें, जनकजी पहुँच गये।

गिरीबरू दिख जनकपती जबहिं,
करहिं प्रणाम रथ त्याग तबहिं।

रथ को त्याग दिया। गुरुदेव को देखा, वशिष्ठजी को नमन किया। वामदेवजी ने वशिष्ठजी को नमन किया। दोनों संत मिले। जनकराजजी के गुरुदेव वामदेवजी महाराज और दशरथजी के गुरुदेव वशिष्ठजी महाराज का मिलन हुआ। सुनयनाजी, कौशल्याजी से मिलकर बहुत रोई। सुमित्राजी को गले मिली, कैकेयी से भी गले मिली। कोई राग नहीं, कोई द्वेष नहीं, ईर्ष्या नहीं। ये मैंरे लिये तो ब्यायणजी साहब है। जैसे दोनों महारानीया ब्यायणजी साहब है। कैकेयी भी ब्यायणजी साहब है लेकिन कैकेयी। कैकेयी ने कहा था।

युग–युग तक चलती रहे,
यह कठोर कहानी
रघुकुल में भी थी,
एक अभागन रानी
पुनः जन्म जन्म में सुने जीव ये मेरा
धिक्कार उसे था महास्वार्थ ने
घेरा।

1,00,000
We Need You !
से अधिक सहयोग देकर, दिव्यांगों के सपनों को करें साकार
अपने शुभ नाम या प्रियजन की स्मृति में कराये निर्माण

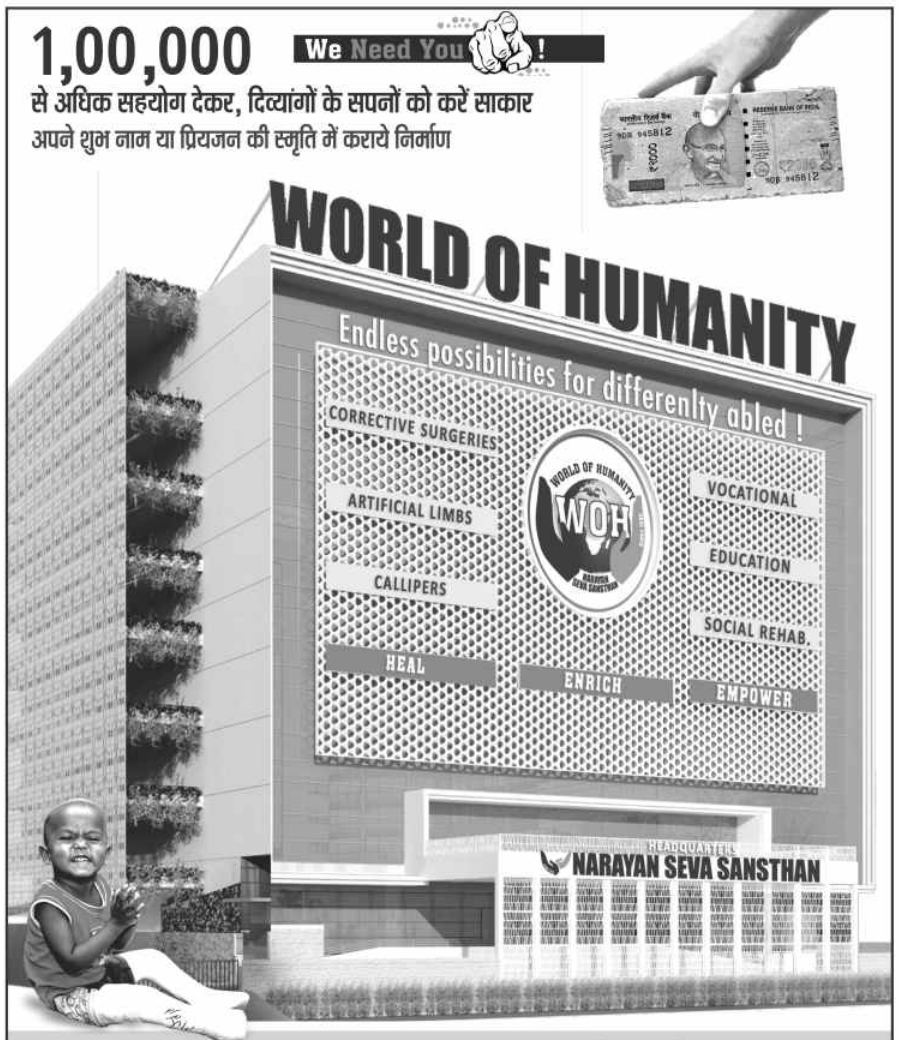

मानवता के मन्दिर में बनेंगे कई वार्ड-सेवा कक्ष
* 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल * 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त* निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी * भारत की पहली निःशुल्क सेन्ट्रल फेब्रीकेशन यूनिट * प्रज्ञाचक्षु , विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों को निःशुल्क आवासीय व्यावसायिक प्रशिक्षण
अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
Cont. : 0294-6622222, +917023509999 (WhatsApp)

कालू सालों बाद नहाकर निखरा

उदयपुर के जिले की कोटड़ा पंचायत समिति के रणेश गांव में आयोजित संस्थान शिविर में 7–8 साल का एक बालक, फटे–पुराने कपड़े, बाल–नाखून बढ़े हुए, शरीर से दुर्गन्ध आती हुई, हाथ –पैर और मुंह पर मैल की परत जमी हुई, ऐसा लग रहा था। जैसे बचपन की खूबसूरती को गरीबी ने ढक लिया हो बच्चे की ऐसी दीन दशा देखकर संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल की आंखें भी नम हो उठीं,वे बच्चे के पास गए, उसने अपना नाम कालू बताया। वो सहमा–डरा हुआ लग रहा था, उसे बिस्किट–चॉकलेट खाने को दिए, अपने पास बिठाया और बातों से राजी किया। नाखून–बाल काटे, मंजन करवाया, साबुन–शैम्पू लगाकर अच्छे से कालू को स्वयं अध्यक्ष ने नहलाया। देखते ही देखते उसके हाथ–पावों और बदन से मेल गलकर उतरने लगा। चेहरा निखर उठा, कालू बहुत सुन्दर दिखने लगा।

कालू को संस्थान ने नए कपड़े पहनाकर उसे रोज नहाने, कपड़े बदलने और मंजन करने के साथ साफ रहने की सीख दी। ऐसे बच्चों का जीवन स्तर ऊपर उठाने में आपश्री भी बन सकते हैं ....

सम्पादकीय

सफलता सभी को प्रिय होती है। हरेक व्यक्ति सफल होना चाहता है। असफलता का वरण कोई नहीं करना चाहता, और करे भी क्यों? मानव जीवन मिला ही इसलिये है कि हम सफलता के सोपान चढ़ते चले जायें। पर सफलता दो प्रकार से मिलती है यह भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

किसी को सफलता मिलती है किस्मत से तो किसी को सफलता मिलती है लगन से। सफलता तो दोनों ही हैं किन्तु दोनों में मौलिक भेद है। यह भेद केवल प्रकार का नहीं वरन् श्रेष्ठता का भी है। किस्मत से प्राप्त सफलता में व्यक्ति का कोई योगदान नहीं होता है। जबकि लगन से प्राप्त सफलता का सारा ही किया–करा व्यक्ति का स्वयं का होता है। किस्मत की सफलता भले ही सफलता है पर उसका स्वाद फीका ही होता है जबकि लगन, परिश्रम और पुरुषार्थ के प्राप्त सफलता का स्वाद अविस्मरणीय होता है।

कुछ काव्यमय

सफलता मानव जीवन का पड़ाव है।
सफलता पाने के दो बर्ताव है। किस्मत और लगन
दोनों से आती है सफलता।
पर किस्मत से पाई तो
क्या पाई ?
पुरुषार्थ से ही मिले तो
मन फूलता–फलता।

सत्य के निकट रहें

मनुष्य अपने जीवन में जो भी हितकारी कार्य करता है दर असल उसका प्रेरक अथवा कर्ता तो परम पिता परमेश्वर है, वह तो माध्यम मात्र है लेकिन ऐसा करते समय मनुष्य इतना बौरा जाता है कि वह स्वयं में नहीं समा पाता। यही अहंकार उसकी जीवन यात्रा में बाधक बन जाता है।.....एक राजा को इस बात का बहुत ही अहंकार था कि वह अपनी प्रजा का भरण–पोषण करता है। लोग व्यर्थ ही विष्णु को जगत का पालनहार कहते हैं। राजा ने अपनी सोच की पुष्टि के लिए भरे दरबार में मंत्रियों से भी प्रश्न किया कि प्रजा का पालक कौन ? चाटुकार मंत्रियों ने कहा – हुजूर आप ही। एक मंत्री को खामोश बैठा देख राजा ने पूछा –आप कुछ न कहेंगे ? मंत्री बोला महाराज ! क्षमा करें। मैं उन दर्शनार्थियों की व्यवस्था के बारे में सोच रहा था जो पड़ोसी गाँव में आये एक योगी के लिए जुट रहे है। राजा भी उस मंत्री के साथ योगी से मिलने जा पहुँचा। देखा लंगोटीधारी साधु के आस–पास भारी भीड़ है। राजा ने योगी से कहा–न आपके पस ओढ़ने–बिछाने का कुछ है और न ही कोई पात्र। भोजन का भी ठिकाना नहीं। जब तक आप यहाँ रहेंगे ये सारी व्यवस्थाएँ मैं करूँगा। योगी यह सुन राजा से पूछ बैठा–राजन्! आपके राज्य में कितने पक्षी, कुत्ते, बिल्ली और कीट –पतंगे

हैं। ..... राजा ने कहा 'उनकी संख्या से मेरा क्या काम ? बाबा ने पूछा–तो उन्हें भोजन कौन भेजता है ? राजन् प्राणीमात्र का पालक –पोषक ईश्वर है। तुम्हें अहंकार के अंधकार से बाहर निकलने की जरूरत है। राजा ने योगी को चुनौती दी कि वह उसकी बात से सहमत नहीं है। राजा ने तत्काल एक डिबिया मंगवाई और वहीं रेंग रहे एक कीड़े को उसमें बंद करते हुए –योगी से कहा–देखता हूँ इसे आपका भगवान कैसे भेजता है भोजन।..... अगले दिन डिबिया खोली तो देखा कि कीड़ा चावल के दाने से लिपटा है। यह दाना डिबिया बंद करते समय राजा की ललाट के तिलक से उसमें गिर पड़ा था। .....राजा योगी के चरणों में गिर पड़ा और उस दिन से न केवल वह प्रभु भक्ति में लीन रहने लगा बल्कि जीव दया के कार्यों में अधिक रुचि लेने लगा।'

राजा की तरह आज का व्यक्ति भी अहंकार और सन्देह के दायरे में घूम रहा है। उसे लक्ष्य का पता नहीं है। उसे भीतर की आवाज सुनाई नहीं दे रही। परमात्मा उसके सदृश्य हो भी तो वह यकीन नहीं करेगा। ऐसा क्यों है ?.....इसलिए कि व्यक्ति खुद अपने बुने जाल में फंसा है। वह अपने आस–पास देख रहा है पर भीतर नहीं।..... ऐसा व्यक्ति दूसरों की पीड़ा कैसे समझ पाएगा। आत्म वंचना सुगम तो है, पर व्यक्ति इसके फेर में पड़कर सत्य से दूर होता जाता है। अहंकारी व्यक्ति हर समय और हर स्थान पर अपनी समझ को सही मानकर दूसरों पर थोपने का प्रयास करता है।..... दूसरों का अनुभव और राय उसके लिए महत्त्व नहीं रखती परिणाम स्वरूप इसका खामियाजा भी उसे उठाना पड़ता है। 'स्व' के खोल से निकले और 'पर' में प्रवेश करें तभी जीवन यात्रा के अन्तिम मुकाम तक पहुँच पायेंगे। अपने सुख में ही निमग्न न रहें। दूसरों की पीड़ा और परेशानी को भी समझें और उसमें सामर्थ्यानुसार सहयोग करें।.....श्रीमद् भागवत में कहा भी गया है कि याद करने पर बीता हुआ सुख भी दुख देता है। तो फिर दुख तो दुख देगा ही। अतएव अहंकार, अभिमान का परित्याग करें और अंतर्मन की व्यवस्थाओं को अध्यात्म से जोड़ते हुए उसे पीड़ित जन की सेवा में सुनियोजित करें। – **कैलाश 'मानव'**

बड़ा छोटू

जब हमारे सामने कोई छोटा व्यक्ति अर्थात् गरीब–निर्धन, दीन–दुःखी आदि आता है तो, हमारा व्यवहार उसके साथ अलग प्रकार का होता है और अगर हमारे कोई धनवान, रूतबे वाला, ऊँचे पद वाला सम्मानित व्यक्ति हो तो, हमारा व्यवहार उसके साथ अलग होता है। हम बड़े लोगों के साथ सलीके से पेश आते हैं और छोटे

लोगों को सम्मान नहीं देते और उनके साथ तू–तड़ाके से बात करते हैं। आखिर हमारे व्यवहार में ऐसा अंतर क्यों?

उदाहरण के तौर पर ये छोटू जो चाय–नाश्ते की दुकानों, होटलों, रेस्टोरेंट आदि पर काम करते हैं, ये छोटे नहीं होते, बल्कि अपने घर के बड़े होते हैं। आइए एक उदाहरण के माध्यम से इस तथ्य को समझने का प्रयास करते हैं

एक व्यक्ति अपनी नई चमचमाती कार में ढाबे पर खाना खाने गया। वहाँ एक छोटा लड़का था, जो ग्राहकों को खाना परोस रहा था। कोई उसे ऐ छोटू ! तो कोई ओए छोटू! कहकर उसे बुला रहा था। वह नन्हीं –सी जान ग्राहकों के बीच उलझ कर रह गई। यह संबोधन उस व्यक्ति के मन को कचोट रहा था। उसने छोटू को छोटू जी कहकर अपनी तरफ बुलाया। बहुत प्यारी–सी, मासूम–सी मुस्कान लिए छोटू उस व्यक्ति के पास आकर बोला –जी साहब, क्या खाएँगें?

साहब नहीं, भैयाजी कहोगे तो बताऊँगा –व्यक्ति ने प्यार से उत्तर दिया।

यह सुनकर छोटू मुस्कुरा दिया और आदर के साथ बोला – भैयाजी, आप क्या खाओगे? तब व्यक्ति ने खाना ऑर्डर किया। खाना आ जाने पर वह खाना खाने लगा, परंतु छोटू के लिए वह ग्राहक नहीं, मेहनत बन गया था। छोटू उसकी एक आवाज पर दौड़ा चला आता और प्यार से पूछता–भैया जी, और क्या लाऊँ? खाना अच्छा तो लगा ना आपको?

हाँ छोटू जी। आपके प्यार ने इस खाने को और अधिक स्वादिष्ट बना दिया है –व्यक्ति ने उत्तर दिया। खाना खाने के बाद उस व्यक्ति ने बिल चुकाया और सौ रूपये छोटू जी के हाथ पर रख कर कहा – यह तुम्हारे हैं। मालिक से मत कहना।

जी, भैया जी – छोटू ने उत्तर दिया।

"इन रूपयों का क्या करोगे?"

"आज माँ के लिए चप्पलें ले आऊँगा। चार दिनों से माँ के पास चप्पलें नहीं है। नंगे पाँव धूप में चली जाती है साहब, लोगों के घर काम करने।"

इतना सुनते ही व्यक्ति की आँखें भर आई। उसने आगे पूछा –और कौन–कौन तुम्हारे घर में?

माँ, मैं और छोटी बहन हैं। पापा भगवान के घर चले गए।

अब वह व्यक्ति और कुछ भी नहीं पूछ पाया। उसने कुछ और रूपए जेब से निकाले और बोला –आज घर पर आम ले जाना, अपने और अपनी बहन के लिए आइसक्रीम ले जाना, और माँ के लिए एक साड़ी भी ले जाना। अगर माँ पूछे ताक बता देना कि पापा ने एक भैया को भेजा था, वही ये सब देकर गए हैं।

छोटू व्यक्ति से लिपट कर रोने लगा। व्यक्ति ने छोटू को गले लगा लिया।

वास्तव में, छोटू अपने घर का बड़ा निकला, जो पढ़ाई की उम्र में अपने घर का बोझ उठा रहा था।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

पोस्ट ओफिस में एक नोमीनल रोल होता था। यह एक रजिस्टर था जिसमें पोस्ट मास्टर को आगामी 10 दिनों के कार्यों का विभाजन भरना पड़ता था। इससे पोस्ट ओफिस का कार्य अत्यन्त सुचारू रूप से चलता था। पोस्ट ओफिस का कोई भी काउन्टर खाली नहीं रह सकता था। यदि एक व्यक्ति ही होता तो भी उसे सभी काउन्टर संभालने पड़ते थे। छुट्टियां बहुत मुश्किल से मिलती थी। इतना कसा हुआ प्रशासन अन्य कार्यालयों में भी हो तो कुशलता बहुत बढ सकती है।

कैलाश ने पोस्ट ओफिस की कार्य पद्धति से बहुत कुछ सीखा। देश भर में आज भी कई स्थानों पर एकल पोस्ट ओफिस हैं, इन्हें सिर्फ एक व्यक्ति ही संचालित करता है, यदि यह व्यक्ति भी छुट्टी पर चला जाये तो डाक अधीक्षक उसकी छुट्टी मंजूर करने के साथ ही उसकी जगह किसी अन्य कर्मचारी की नियुक्ति करता है जिससे डाकखाना निर्बाध चलता रहे।

कैलाश पहले से ही 3 व्यक्तियों का काम संभाल रहा था, मनी आर्डर, वीपीपी और रजिस्ट्री, तीनों काउन्टर उसी के पास थे। काम इतना अधिक हो जाता कि उसे रात को बारह–बारह बजे तक काम करना पड़ जाता, उपर से मुख्यालय को रोज का विवरण अलग से भेजना पड़ता था। सोमवार को दोहरी डाक होती इस कारण सुबह 4 बजे ही डाकखाने जाना पड़ता। पोस्ट ओफिस में रहते कैलाश को कड़ी मेहनत की आदत पड़ गई। विभाग ईमानदार था, इसका भी उसके जीवन पर प्रभाव पड़ा।

हँसना एक महत्वपूर्ण व्यायाम है

अगर कहा जाए कि हँसी दुनिया की सर्वश्रेष्ठ दवा है तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। ये जहां मानसिक तनाव से राहत दिलाती है वहीं मानवीय सबंधों को सुखद बनाकर हमारे पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन को भी सफल बनाती है। अगर अपने जीवन को मुसकुराहट से भर लें तो आधी से ज्यादा समस्याएं इसी के जरिए दूर हो जाती है।

जिस व्यक्ति के चेहरे पर हमेशा मुसकान बनी रहती है उसके चेहरे पर अध्यात्म का तेज भी प्रकट होता है मुसकान व्यक्ति को केवल धर्म और अध्यात्म की ओर ही प्रेरित नहीं करती है। बल्कि ये उसे अनके बीमारियों से भी दूर रखती है। मनोचिकित्सकों का मानना है कि मुसकराने से मस्तिष्क में कुछ ऐसे हार्मोन्स का स्त्राव होता है जो मस्तिष्क को सशक्त और खुशमिजाज बनाता है। अध्यात्म और धर्म की ओर व्यक्ति का मन तभी लगता है जब वो पूर्ण रूप से सुखी प्रसन्न और निरोग रहता है। रोगी व्यक्ति को तो अपना ही होश नहीं रहता। ऐसे में वो अध्यात्म से कैसे जुड़ सकता है। मुसकुराहट को आप एक संपूर्ण व्यायाम भी मान सकते हैं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

भावना जैसे बच्चों का जीवन सवारें

गोगुन्दा तहसील की अरावली पहाड़ियों की गोद में बसे नाथिया थल गांव की निवासी है भावना। जिसकी उम्र महज 7 वर्श है। करीब ढाई वर्श पहले लम्बी बीमारी से पिता चल बसे। माँ आदिवासी परम्परा के चलते भाई धीरा और वृद्ध दादा–दादी के पास छोड़ नाते चली गई। स्थिति ऐसी हुई कि इन मासूम भाई–बहन को खाने को रोटी और पहनने के कपड़ों के लाले पड़ गए। नाखून–बाल बढ़ गए, इन्हें न नहाने की सुध–न खाने को कुछ। टूटी–फूटी केलू की छत के नीचे रो–रोकर दिन काटने वाले ये बच्चे स्कूल की राह से भी अनजान हैं।

संस्थान को जैसे ही इनकी जानकारी मिली तो इनके गांव में अन्नदान–वस्त्रदान, शिक्षा, एवं चिकित्सा शिविर लगाने का निर्णय लिया। भावना को बूलाकर उसके नाखून–बाल काटे.... ब्रश करवाकर नहलाया, नए कपड़े–शूज पहनाकर बिस्किट दिए। वृद्ध दादा–दादी को खाने को राशन और मक्का भी दिया गया। ऐसे ही कई निर्धन परिवार शिविर में आए जिन्हें सहायता दी गई। बच्चे अपनत्व पाकर खिलखिला उठे।

अनुभव अमृतम्

सीकर के गिरधारी जी, उनकी पत्नी तारादेवी कुमावत महोदया, उनकी बेटी आँचल विश्व की सबसे छोटी उम्र की जादूगरनी उनका बेटा सब अच्छा है। ये मूक बधिर बच्चे हमें समझाते हैं कि अरे! तुम तो बहुत पहले से अच्छी स्थिति में हो, तो भी चिंता क्यों करते हो? विकार क्यों जगाते हो? ये विपश्यना ध्यान विकारों से मुक्ति कराता है। पिछले जन्म का ध्यान होगा, महाराज बैंक बैलेंस होगा। कभी राजमल जी भाईसाहब ने इतनी कृपा की, मफत काका निरंतर पधारते रहे। चर्चगेट के उनके कार्यालय की दूसरी मंजिल पर बुलाते रहे। वाह! कैलाश वाह! मुम्बई जब जाता मुम्बई सेन्ट्रल रेलवे के सामने दो होटल ऐसी है, जिसमें बेड मिलते हैं।

छठी मंजिल पर है बेड ले लो और लॉकर साथ में है, उसमें अपनी अटेची रख दो। कम्बाइंड बाथरूम में स्नान कर लो। उस समय तो सोचा भी न था कि सपने में भी कभी हवाई जहाज में बैठेंगे। आपने पिछली पंक्तियों में मलेशिया की यात्रा पढ़ी है। सबसे पहले हवाई जहाज में बैठे तो मुम्बई से मलेशिया की राजधानी भैया बाबू ये यात्रा चल रही है 1988 की, ये यात्रा चल रही है, आज से 32 साल पहले की, ये यात्रा चल रही है।

बड़ी–बड़ी गाँठा गाबा री,
बाँध बाँध ने लावे रे,
नवा धुलाकर लाड़ प्यार सूँ,
नान्या ने पहनावे रे।

ये यात्रा कपड़े पहनाने की, मंजन करवाने की, बाल कटिंग भी करते बच्चे के। उन दिनों किन–किन तीर्थों की यात्रा हुई। ये वनवासी क्षेत्र कैलाश जी के तीर्थ, राजमल जी भाईसाहब के तीर्थ, मफत काका के भी तीर्थ, के.एस. हिरण साहब, डॉक्टर एस.एन. शर्मा, डॉक्टर मेहता जी, डॉक्टर नवरतन जी दुग्गड़, ये यात्रा भगवान की कृपा थी।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 386 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com•आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023